



2

पास-पड़ोस



अरे! क्या हुआ ? काका झोपड़ी से बाहर क्यों भाग रहे हैं ? पास में खेलते हुए रमन ने विवेक से कहा ।
हाँ देखो! इरफान काका की झोपड़ी तो गिर रही है ?
अभी तक तो ठीक थी । यह कैसे हुआ ? वहीं खड़ी राधिका बोली ।
काका को चोट तो नहीं आई ?

उनके घर का सामान भी दब गया होगा । चलो, चलो! हम सब उनके पास चलते हैं ।

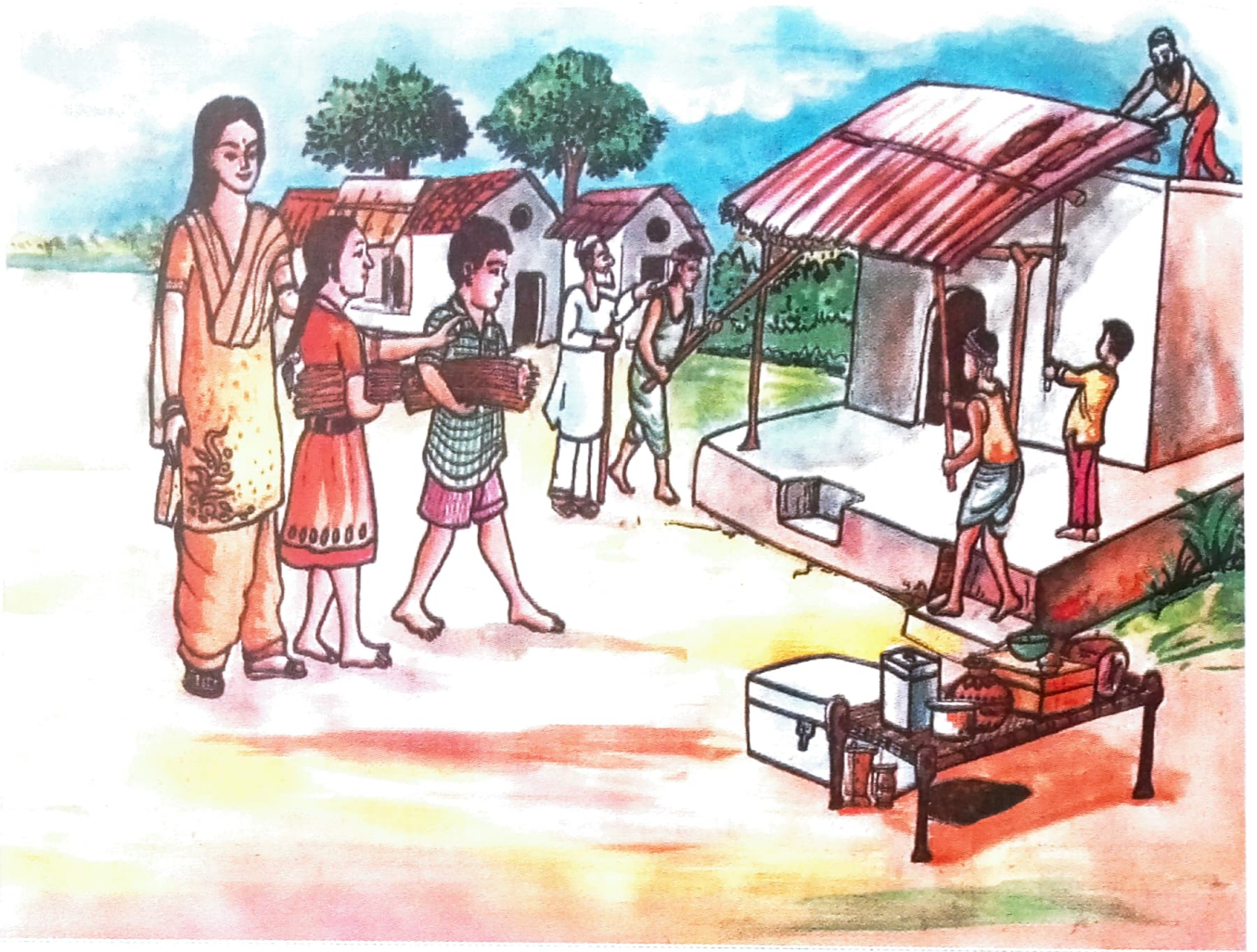
रमन, विवेक और राधिका भागकर काका की झोपड़ी के पास पहुँचे ।
तब तक काका के सभी पड़ोसी भी इकट्ठा हो गए थे ।

पड़ोस की सरला दीदी भी वहाँ पहुँच गई । दीदी ने कहा— काका क्या हुआ? इतना घबरा क्यों रहे हैं?

इरफान काका ने कहा— अरे मैं अकेले क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है । मेरी झोपड़ी गिर गई है । तुम्हारी काकी और जावेद भी यहाँ नहीं हैं । सारा सामान दब गया है । कैसे निकालूँगा ? कहाँ रहूँगा ? बारिश का मौसम भी है । मुझे जल्दी ही सब कुछ सँभालना है । इतनी जल्दी में सब कुछ कैसे होगा ?

इरफान काका अपने पड़ोसियों की सदैव मदद करते हैं । उनको परेशान देखकर सभी चिन्तित थे । काका के पास इकट्ठा सभी पड़ोसी बोले— आप चिन्ता न करें काका । आप अकेले नहीं हैं, हम सब आपके साथ हैं । सभी मिलकर काका की झोपड़ी ठीक करने की बात करने लगे ।





सभी ने मिलकर झोपड़ी में दबे सामान को बाहर निकाला। तनवीर चाचा ने कहा मेरे पास सूखे बाँस हैं। मैं ले आता हूँ। सरला दीदी ने अपने घर से पुआल लाकर दिया। सभी मिलकर काका की झोपड़ी बनाने लगे। सरला दीदी ने पड़ोस के राकेश और मोहन चाचा को भी फोन करके बुला लिया।

सभी ने मिलकर बाँस गाड़े। पुआल से छप्पर बनाया। रमन, विवेक और राधिका ने टूटे सामान को छाँटकर अलग किया। घर के सामान को ठीक से लगाया और घर की सफाई की।

रमन ने पूछा, अरे! यह कूड़ा-कचरा कहाँ रखा जाए ?

सरला दीदी ने कहा— इसे घूर गड्ढे में डाल आओ।

रमन ने सारा कूड़ा—कचरा घूर गड़ढे में डाल दिया। यह काम हो ही रहा था तभी विवेक के पापा पेड़ा और पानी लेकर आए। सभी ने पेड़े खाए और पानी पिया।

विवेक ने इरफान काका की चारपाई नई झोपड़ी में रखी। राधिका ने अपने घर से लाकर साफ चादर बिछाई। काका उस पर बैठे। उनकी आँखों से आँसू छलक रहे थे।

राधिका बोली— इस बार ईद में काकी की सेवइयाँ बहुत मजेदार बनी थीं। मैंने तो बस एक ही दिन खाई थी— उदास होकर विवेक बोला।

भाभी ने ईद में बहुत ही स्वादिष्ट खाना भी बनाया था—तनवीर चाचा बोले।

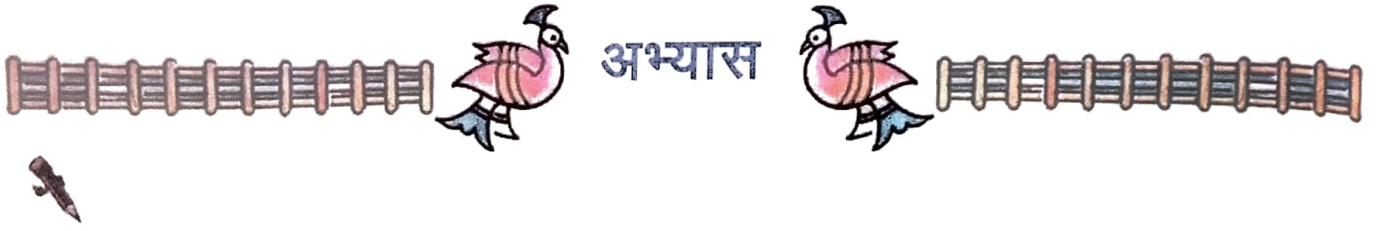
सरला दीदी, होली में आपके घर की गुझिया भी बहुत मजेदार बनती हैं— राधिका, विवेक और रमन एक साथ बोले।

सभी होली और ईद की बातें याद करके हँसने लगे। थोड़ी मुस्कुराहट काका के चेहरे पर भी आई। अब उनकी घबराहट भी कम हो चुकी थी। सभी काका को सलाम करके जाने लगे। इरफान काका भावुक होकर बोले—आप सभी ने मेरी मुसीबत को अपना समझकर मेरी मदद की है। आप लोगों की इस मदद को मैं सदैव याद रखूँगा।

सब एक साथ बोले— काका हम सब पड़ोसी हैं, हम सदैव ही एक—दूसरे की मदद करेंगे।

काका मुस्कुराए। बाकी लोग भी खुशी—खुशी अपने—अपने घर को चल दिए।





अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर लिखो—

क. इरफान काका की झोपड़ी किस मौसम में गिरी ?

ख. रमन, विवेक और राधिका ने इरफान काका की क्या सहायता की?

ग. झोपड़ी बनाने के लिए बाँस और पुआल किसने दिया था ?

घ. पड़ोसी किसे कहते हैं ?

2. जोड़े बनाओ—

क. सरला दीदी ने अपने पड़ोसियों की सदैव मदद करते हैं।

ख. रमन, विवेक और राधिका ने मेरे पास सूखे बाँस हैं।

ग. इरफान काका अपने घर से पुआल लाकर दिया।

घ. तनवीर चाचा ने कहा मिलकर सामान को बाहर निकाला।

3. सही कथन के सामने (✓) का और गलत कथन के सामने (x) का निशान लगाओ—

क. पास-पड़ोस के लोगों को प्रणाम/सलाम करना। ()

ख. जरूरत पड़ने पर पड़ोसी की मदद करना। ()

ग. अपने पड़ोसी की बुराई करना। ()

घ. पड़ोसी के साथ मिलकर त्योहार मनाना। ()

ङ. पड़ोस के बच्चों के साथ मिलकर खेलना। ()



4. (क) तुम्हारे पड़ोस में बहुत गंदगी है। इसकी सफाई के लिए तुम क्या करोगे? सही का निशान (✓) लगाओ—

- गंदगी को ऐसे ही पड़ा रहने दोगे।
- पड़ोसियों के साथ मिलकर सफाई करोगे।

(ख) यदि तुम्हारा कोई मित्र सहारा लेकर चलता है। उसे तुम्हारे साथ खेलना है। तुम क्या करोगे ? सही का निशान (✓) लगाओ—

- उसके साथ खेलने से मना कर दोगे।
- ऐसा खेल खेलोगे जिसे वह भी खेल सके।

5. (क) तुम्हारे पास-पड़ोस में कौन-कौन रहता है?

..... ।
(ख) तुम अपने पड़ोसियों के साथ कौन-कौन से कार्य मिलजुल कर करते हो?

..... ।

6. कविताएँ पढ़ो और अपने मनपसंद त्योहार पर एक कविता लिखो।

- होली आई, होली आई
सबके मन को खूब है भाई
नीले-पीले लाल रंगों से
भरी-भरी पिचकारी लाई
पापड़, मठरी, लड्डू, गुझिया
सबने मिलकर खूब है खाई।

- ईद आई, ईद आई
सबने घर में सेवई बनाई
सबने सबको गले लगाकर
मिलजुल कर है ईद मनाई।

